नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

बांग्लादेश ; नई सरकार से अच्छे संबंधों की उम्मीद

बांग्लादेश में 15 वर्षों बाद सत्ता परिवर्तन केवल एक चुनावी घटना नहीं है, बल्कि दक्षिण एशिया की भू-राजनीति में एक महत्वपूर्ण मोड़ है. शेख हसीना के लंबे शासन के बाद बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी को मिला स्पष्ट बहुमत जनादेश इस बात का संकेत है कि ढाका की जनता राजनीतिक संतुलन, संस्थागत सुधार और नई विदेश नीति की अपेक्षा कर रही है. अब सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि तारिक रहमान के नेतृत्व में बनने वाली सरकार भारत के प्रति कैसा रुख अपनाएगी.

शेख हसीना के दौर में भारत-बांग्लादेश संबंध अभूतपूर्व ऊंचाई पर पहुंचे थे. सुरक्षा सहयोग, सीमापार आतंकवाद पर नियंत्रण, उत्तर-पूर्व भारत में उग्रवादी गुटों पर कार्रवाई और कनेक्टिविटी परियोजनाओं ने द्विपक्षीय रिश्तों को मजबूत आधार दिया. लेकिन इसी निकटता को लेकर बांग्लादेश के भीतर एक वर्ग में असंतोष भी था, जिसे बीएनपी ने राजनीतिक मुद्दा बनाया. 'बांग्लादेश फर्स्ट' का नारा इसी भावना का विस्तार है, अर्थात् विदेश नीति में अधिक संतुलन और राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता दी जाएगी.

कूटनीतिक दृष्टि से बीएनपी सरकार का पहला प्रयास यह होगा कि वह खुद को 'भारत विरोधी' नहीं, बल्कि 'भारत के साथ समानता आधारित संबंध' की पक्षधर के रूप में प्रस्तुत करे. तारिक रहमान समझते हैं कि भारत बांग्लादेश का सबसे बड़ा पड़ोसी, महत्वपूर्ण व्यापारिक साझेदार और रणनीतिक कारक है. ऐसे में खुली टकराव की नीति व्यावहारिक नहीं होगी. हालांकि, जल बंटवारे, सीमा प्रबंधन, व्यापार असंतुलन और तीस्ता समझौते जैसे मुद्दों पर ढाका का स्वर पहले से अधिक मुखर हो सकता है. सुरक्षा के संदर्भ में भारत के लिए सबसे संवेदनशील प्रश्न यह रहेगा कि क्या बीएनपी सरकार पूर्ववर्ती व्यवस्था की तरह उग्रवादी तत्वों पर सख्त नियंत्रण बनाए रखेगी. अतीत में बीएनपी और जमात-ए-इस्लामी के गठबंधन काल में भारत ने सीमा पार आतंकी नेटवर्क को लेकर चिंता जताई थी. अब जबकि जमात लगभग 70 सीटों के साथ एक प्रभावशाली विपक्षी शक्ति है, भारत यह देखेगा कि नई सरकार सुरक्षा ढांचे में किस प्रकार की निरंतरता रखती है. यदि ढाका सीमा सुरक्षा, खुफिया साझेदारी और कट्टरपंथी संगठनों पर नियंत्रण की नीति जारी रखता है, तो यह भरोसे को मजबूत करेगा. अन्यथा उत्तर-पूर्व भारत की स्थिरता पर असर पड़ सकता है.

आर्थिक मोर्चे पर अवसर अधिक हैं. बीएनपी की आईटी और एसएमई केंद्रित नीतियां भारतीय निवेश के लिए नया द्वार खोल सकती हैं. डिजिटल कनेक्टिविटी, ऊर्जा सहयोग, बंदरगाह उपयोग और क्षेत्रीय आपूर्ति श्रृंखलाओं में साझेदारी दोनों देशों के हित में है. बांग्लादेश यदि चीन और पश्चिमी शक्तियों के साथ संतुलन बनाते हुए भारत को प्राथमिक भागीदार बनाए रखता है, तो क्षेत्रीय स्थिरता को बल मिलेगा.

दिल्ली के लिए भी यह समय धैर्य और व्यावहारिक कूटनीति का है. सत्ता परिवर्तन को संदेह की दृष्टि से देखने के बजाय नई सरकार के साथ प्रारंभिक संवाद, उच्चस्तरीय यात्राएं और लंबित समझौतों पर प्रगति विश्वास बहाली का आधार बन सकती है. भारत को यह समझना होगा कि बांग्लादेश की आंतरिक राजनीति में 'राष्ट्रीय स्वाभिमान' एक बड़ा कारक है. कुल मिलाकर तारिक रहमान की सरकार के सामने चुनौती यह होगी कि वह घरेलू जनादेश और क्षेत्रीय वास्तविकताओं के बीच संतुलन साधे. यदि 'बांग्लादेश फर्स्ट' का अर्थ आत्मविश्वासी, स्थिर और सहयोगी पड़ोसी बनना है, तो भारत-बांग्लादेश संबंध नई परिपक्वता की ओर बढ़ सकते हैं. परंतु यदि यह नारा भावनात्मक राष्ट्रवाद की ओर झुकता है, तो कूटनीतिक दूरी बढ़ने का जोखिम भी रहेगा. दक्षिण एशिया की स्थिरता अब ढाका और दिल्ली,दोनों की राजनीतिक परिपक्वता की परीक्षा लेने जा रही है.

महान नागरिक राष्ट्र बनने की आकांक्षा के लिए हमारी सोच में परिवर्तन की आवश्यकता है

संबंध तटस्थता- देने से लाभ प्राप्त करने की कला

डॉ. दिलीप सिंह

भारतीय समाज परंपरागत रूप से सामूहिक पहचान से आकारित रहा है, जो अक्सर व्यक्ति को सीमित महत्व देता है. जन्म के क्षण से ही, बच्चे की सामाजिक उन्नति या पिछड़ापन अक्सर उस समुदाय द्वारा निर्धारित होता है जिसमें वह जन्म लेता है, चाहे उसके माता-पिता की पृष्ठभूमि या व्यक्तिगत क्षमताएं कुछ भी हों. ऐसी सामूहिक पहचान व्यक्तिगत क्षमता को कमतर आंकती है और व्यक्ति की वास्तविक उपलब्धियों और उसकी अंतर्निहित क्षमता के बीच एक अंतर पैदा करती है. यह अंतर अक्सर समाज में संघर्षों, अन्याय और असमानताओं का मूल कारण बन जाता है. जब तक हम व्यक्तिगत स्तर पर वास्तविक उपलब्धि और क्षमता के बीच के अंतर को कम करने के लिए सचेत रूप से काम नहीं करते, तब तक हम वास्तव में एक महान नागरिक राष्ट्र (जीसीएन) बनने की आकांक्षा नहीं रख सकते. इसे प्राप्त करने के लिए हमारी सोच में परिवर्तन की आवश्यकता है. मूल रूप से, सभी मनुष्य समान हैं, चाहे वे जन्म के आधार पर किसी भी समुदाय से संबंधित हों. आनुवंशिक अध्ययन भी बताते हैं कि मानवता में गहरी जैविक समानताएं हैं, जिसमें महिला आबादी 90 प्रतिशत से अधिक आनुवंशिक समानता प्रदर्शित करती है. इससे एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है- यदि हमारी जैविक उत्पत्ति इतनी निकटता से जुड़ी हुई है, तो हम कभी-कभी एक-दूसरे के प्रति अमानवीय तरीके से व्यवहार क्यों करते हैं?

हमारी सोच प्रक्रिया का एक और उदाहरण आरआर-वक्र के माध्यम से दर्शाया गया है. महिलाओं को अक्सर बेटी, बहन, पत्नी और माँ जैसी सामाजिक पहचानों के माध्यम से स्वाभाविक सम्मान प्राप्त होता है. समाज का एक बड़ा वर्ग इस बात से सहमत है कि माँ को सर्वोच्च सम्मान प्राप्त होता है, चाहे परिवेश शहरी हो या ग्रामीण. इस क्रम में अक्सर बेटी या बहन का स्थान आता है, हालाँकि यह सम्मान अक्सर सशर्त होता है. कई मामलों में, बेटियों और बहनों का सम्मान तब तक होता है जब तक वे पिता या भाई जैसे पुरुष परिवार के सदस्यों की अपेक्षाओं और निर्देशों का पालन करती हैं. यदि वे ऐसा करने में विफल रहती हैं, तो उन्हें मिलने वाले सम्मान का स्तर धीरे-धीरे कम हो सकता है. इस सामाजिक संरचना में, पत्नी की स्थिति को अक्सर तुलनात्मक रूप से कम सम्मान प्राप्त होता है.

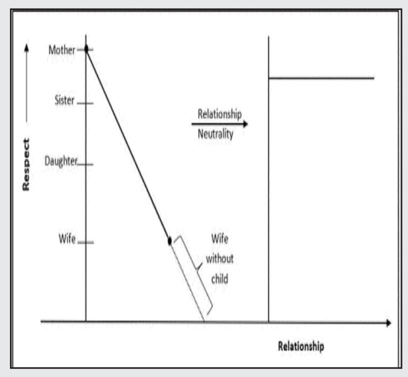

चित्र 1- आम राय पर आधारित संबंध-सम्मान (आरआर) वक्र. दिलचस्प बात यह है कि जब कोई पत्नी माँ बनती है, तो परिवार का उसके प्रति व्यवहार अक्सर काफी बदल जाता है और उसका सामाजिक मूल्य बढ़ने लगता है. इसके विपरीत, यदि वह माँ नहीं बन पाती है, तो उसे अलगाव, कम सम्मान और सामाजिक एकांत का अनुभव हो सकता है. इस प्रकार की सामाजिक परिस्थितियाँ उसके भावनात्मक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकती हैं, जिससे अक्सर तनाव, आत्मसम्मान में कमी और आत्म-मूल्य की भावना में गिरावट आती है.यह स्थिति इस बात पर ज़ोर देती है कि महिलाओं को केवल सामाजिक पदानुक्रम के सदस्य के रूप में नहीं, बल्कि एक व्यक्ति के रूप में मान्यता और सम्मान देना कितना ज़रूरी है. इसके लिए हमें समानता, स्वतंत्रता, सौहार्द, न्याय और पर्यावरण मित्रता जैसे मानवीय मूल्यों के आधार पर अपने विचारों का मूल्यांकन करना होगा. प्रत्येक कथन या व्यवहार को इस कसौटी पर खरा उतरना होगा. एक समाज के रूप में, हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि चाहे महिला बेटी हो, बहन हो, पत्नी हो या माँ, उसकी क्षमता का पोषण हो और उसे विकसित होने का अवसर मिले. व्यक्तिगत क्षमता को कम आंकना परिवारों या समाज की समृद्धि में योगदान नहीं देता. परिवार में महिला की भूमिका या रिश्ते की परवाह किए बिना, उसकी गरिमा सुनिश्चित होनी चाहिए. सम्मान रिश्ते से परे होना चाहिए और प्रत्येक व्यक्ति के अंतर्निहित मूल्य पर आधारित होना चाहिए. यदि हम वास्तव में राष्ट्रीय प्रगति और सतत विकास की आकांक्षा रखते हैं, तो हमें लैंगिक समानता और प्रत्येक व्यक्ति की गरिमा को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी होगी.

(नोट- उपरोक्त लेख 50 विभिन्न उत्तरदाताओं की राय पर आधारित है)

उभरते भारत के लिए बजट

विकास इंजन के रूप में कपड़ा उद्योग

गिरिराज सिंह

> **बजट के गणित से राष्ट्रीय दिशा तक – विकसित भारत का मार्ग**
> पहली बार, वस्त्र क्षेत्र को केवल एक पारंपरिक उद्योग के रूप में नहीं, बल्कि भविष्य के रोजगार और उद्यमिता इंजन के रूप में स्थापित किया जा रहा है. 2020 से 2030 के बीच लगभग 5 करोड़ नए रोजगार सृजित करने की क्षमता के साथ, यह क्षेत्र भारत की श्रम-प्रधान विकास रणनीति के केंद्र में है. विकसित भारत बजट नए दौर के वस्त्र स्टार्टअप्स और विस्तारित कंपनियों के लिए ठोस नींव तैयार करता है. रोजगार, कौशल और स्थिरता को केंद्र में रखकर, यह बजट समावेशी विकास के लिए स्पष्ट और डेटा-आधारित मार्गदर्शन प्रस्तुत करता है. यह बजट विकसित भारत 2047 और उससे आगे के स्वरूप को आकार देते हुए भारत को उत्पादक रोजगार और प्रतिस्पर्धात्मक उद्यमिता के क्षेत्र में सोने की चिड़िया के रूप में लौटने का आधार देता है.

विकसित भारत बजट 2026-27 वैश्विक अनिश्चितता के दौर में आत्मविश्वास, दृढ़ संकल्प और स्पष्ट सुधारोन्मुख दृष्टिकोण की ओर इंगित करता है. भारत आज विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था और सबसे तेजी से बढ़ने वाली प्रमुख अर्थव्यवस्था है तथा निकट भविष्य में तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में मजबूती से अग्रसर है. 4.5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था, 7.2 प्रतिशत की अनुमानित जीडीपी वृद्धि दर, 750 बिलियन डॉलर से अधिक का एफडीआई प्रवाह और 2014 में 1.9 लाख करोड़ रुपये से बढ़कर 2026 में 12.21 लाख करोड़ रुपये तक पहुँच चुके पूंजीगत व्यय के साथ यह बजट अवसंरचना-आधारित विकास को सुदृढ़ रूप से स्थापित करता है.

यह व्यापक आर्थिक स्थिरता और भारत की विकास यात्रा के प्रति निरंतर वैश्विक विश्वास को रेखांकित करता है. मुख्य आंकड़ों से परे, यह बजट एक स्पष्ट रणनीतिक दिशा प्रस्तुत करता है, जो समावेशी विकास और श्रम-प्रधान विनिर्माण के माध्यम से व्यापक रोजगार सृजन पर केंद्रित है, जिसमें वस्त्र क्षेत्र इसका मूल केंद्र है.

पारंपरिक मजबूती से रणनीतिक बढ़त तक- विकसित भारत के विकास इंजन के रूप में कपड़ा क्षेत्र प्रधानमंत्री के रणनीतिक नेतृत्व में, बीता वर्ष वस्त्र क्षेत्र के लिए एक निर्णायक मोड़ रहा है. 18 एफटीए के माध्यम से, भारत को अब 800 बिलियन डॉलर के वैश्विक आयात बाजार में से लगभग 466 बिलियन डॉलर मूल्य के कपड़े बाजारों तक विशेष पहुँच प्राप्त है, जिसे 110 बिलियन डॉलर के अमेरिकी बाज़ार तक नए सिरे से पहुँच मिलने से और विस्तार मिला है. हाल ही में घोषित भारत-अमेरिका व्यापार समझौते से निर्यात के पिछले वर्ष की तुलना में काफी बढ़ने की उम्मीद है.

बाजार तक पहुँच को सुदृढ़ करने के साथ-साथ, क्यूसीओ को हटाए जाने से अनुपालन संबंधी बोझ में कमी आई है, जबकि जीएसटी सुधारों ने लंबे समय से चली आ रही उलटी शुल्क संरचना की समस्या का समाधान किया है, जिससे यह क्षेत्र निर्णायक रूप से फाइबर-न्यूट्रल ढाँचे की ओर अग्रसर हुआ है. इन उपायों ने एक मजबूत आधार तैयार किया. बजट 2026 को महत्वपूर्ण बनाने वाली बात इसकी निरंतरता और व्यापकता है. कपास उत्पादकता मिशन जैसी पहलें और व्यापक आर्थिक सुधार अब पायलट चरण से आगे बढ़कर स्थायी मंचों में परिवर्तित किए जा रहे हैं, जो संरचनात्मक सुधारों के वास्तविक स्वरूप को दर्शाता है. दशकों तक वस्त्र क्षेत्र को मुख्यत: कल्याणकारी दृष्टिकोण से देखा जाता रहा. यह बजट वस्त्र क्षेत्र को अब विस्तार, प्रतिस्पर्धात्मकता और दीर्घकालिक राष्ट्रीय विकास के लिए एक मुख्य औद्योगिक रणनीति के रूप में पुन: स्थापित करते हुए उस सोच में एक निर्णायक परिवर्तन का संकेत देता है.

इस प्रकार के हस्तक्षेप की आवश्यकता पूरी तरह स्पष्ट है. भारत का वस्त्र एवं परिधान क्षेत्र देश के जीडीपी में लगभग 2.3 प्रतिशत का योगदान देता है, औद्योगिक उत्पादन का लगभग 12 प्रतिशत हिस्सा है और 5.2 करोड़ से अधिक लोगों को रोजगार प्रदान करता है, जिससे यह अर्थव्यवस्था का एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्तंभ बन जाता है. हालाँकि वैश्विक वस्त्र एवं परिधान निर्यात में भारत की हिस्सेदारी लगभग 4 प्रतिशत है, जो इस क्षेत्र में विस्तार की अपार संभावनाओं को रेखांकित करती है. सरकार ने इस दिशा में एक स्पष्ट और महत्वाकांक्षी मध्यम अवधि का लक्ष्य निर्धारित किया है. 2030 तक वस्त्र क्षेत्र का आकार 350 बिलियन डॉलर तक पहुँचाना और निर्यात को 100 बिलियन डॉलर तक विस्तारित करना.

सुधार रणनीति का पहला स्तंभ मूल्य श्रृंखला का एकीकरण है, जिसका स्पष्ट उद्देश्य वर्ष 2030 तक वस्त्र क्षेत्र की अनुमानित 23 एमएमटी कच्चे माल की आवश्यकता को पूरा करना है—जिसमें प्राकृतिक तथा मानव-निर्मित, दोनों प्रकार के रेशे शामिल हैं. वर्तमान में रेशों की लागत में अस्थिरता कुल इनपुट अनिश्चितता का लगभग 25 से 30 प्रतिशत तक हिस्सा है, जो विशेष रूप से एमएसएमई इकाइयों के लिए मार्जिन, उत्पादन योजना और निर्यात मूल्य निर्धारण को सीधे प्रभावित करती है.

(लेखक केंद्रीय कपड़ा मंत्री हैं- व्यक्त किए गए विचार व्यक्तिगत हैं)

राज्य पुनर्गठन की आवश्यकता क्यों?

व्यापक क्षेत्रफल, बड़ी आबादी और सीमित संसाधनों वाले राज्यों में विकास का असंतुलन देखा जाता है. वहां की सरकार कुछ क्षेत्रों को राजनीतिक कारणों से विकसित करती हैं तो अन्य को पिछड़ा बनाए रखती हैं. पश्चिम महाराष्ट्र में विकास की गंगा बहाई जाती रही, जबकि शिक्षा, उद्योग, रोजगार, स्वास्थ्य के क्षेत्रों में विदर्भ, मराठवाडा व उत्तर महाराष्ट्र (खांदेश) पिछड़कर रह गए.

65 वर्षों के महाराष्ट्र के इतिहास में यही होता आया. हाल के कुछ वर्षों में नागपुर का विकास केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी व मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस की पहल की वजह से हुआ अन्यथा विकास का रथ सिर्फ मुंबई, पुणे, बारामती तक आकर रुक जाता था. उत्तरप्रदेश में 24 करोड़ से ज्यादा तथा महाराष्ट्र व बिहार में प्रत्येक 13 करोड़ की आबादी है. इन राज्यों की जनसंख्या यूरोप के अनेक देशों से भी अधिक है. बड़े राज्यों में प्रशासनिक कठिनाइयां होती हैं. गड़चिरोली और मेलघाट इसलिए पिछड़े रहे, क्योंकि मुंबई में बैठी सरकार की 1,000 किलोमीटर दूर के इन इलाकों पर नजर नहीं जाती थी. अमरावती जिले का विभाजन कर अचलपुर को नया जिला बनाया जाए, तो मेलघाट पर अधिक ध्यान देना संभव होगा. इसके पहले चंद्रपुर, भंडारा, अकोला का विभाजन कर क्रमश: गड़चिरोली, गोंदिया व वाशिम जिले बनाए गए थे. जहां तक राज्यों की बात है, केंद्र में अटलबिहारी वाजपेयी की सरकार के समय 2000 में उत्तराखंड, झारखंड व छत्तीसगढ़ जैसे नए राज्य बनाए गए थे. प्रशासकीय दृष्टि से छोटे राज्यों का संचालन सुगम रहता है. पहली बार 1953 में केंद्र की नेहरू सरकार के भाषावार प्रांत रचना के आधार पर राज्य पुनर्गठन किया था. तब सवाल उठा था कि जब भाषा के मुद्दे पर 3 हिंदी भाषी राज्य यूपी, बिहार व मध्य प्रदेश बन सकते हैं तो मराठी भाषी 2 राज्य महाराष्ट्र व विदर्भ क्यों नहीं बनाए जा सकते?

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

ट्रेड डील में जीता ट्रंप का मन आ गई यहां हार्ले डेविडसन

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, देश के युवा महंगी और पावरफुल बाइक या मोटरसाइकिल चलाना पसंद करते हैं. अब उनके अरमान पूरे करने के लिए अमेरिका की मशहूर बाइक हार्ले डेविडसन भारत में उपलब्ध है. उसके एक्स 440 टी मॉडल की एक्स शोरूम कीमत वेबसाइट पर 279500 रुपये बताई गई है.'

हमने कहा, 'अपने यहां पहले ही शौकीन युवा बुलेट, येजदी या जावा जैसी बाइक को लाइक कर रहे हैं. इसके अलावा लाखों रुपये की कावासाकी निंजा, डुकाटी, हायाबुसा, होंडा, नार्टन, सुजुकी, बीएमडब्ल्यू, अप्रिलिया, अपाचे जैसी पावरफुल बाइक भी विश्व के देशों में लोकप्रिय हैं. अपने यहां बजाज की पल्सर के भी हाई एंड माडल हैं.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, मोदी सरकार ने हार्ले घटाकर अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप को खुश कर दिया है. वैसे हार्ले डेविडसन का भारत से पुराना संबंध है. द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद कबाड़ में निकली इस बाइक के इंजन व पेट्रोल टैंक का इस्तेमाल करते हुए दिल्ली में जुगाड़ू लोगों ने 8 सीटर वाले बड़े ऑटोरिक्शे बना डाले, जो लाल किले या चांदनी चौक के पास से चलते थे. लखनऊ में भी अधिक सवारी वाले लंबे ऑटो में हार्ले डेविडसन के इंजन का इस्तेमाल किया गया.'

हमने कहा, 'भारत के व्यस्त ट्रैफिक वाले शहर इतनी पावरफुल बाइक के लायक नहीं हैं. अमेरिका में समर के मौसम में बांहों पर टैटू बनाए हुए तगड़े बाइकर्स के झुंड तेजी से सड़कों पर गुजरते हैं. ये लोग मौजमस्ती के लिए विशेष रूप से डिजाइन की गई हार्ले डेविडसन बाइक चलाते हैं और मीलों लंबा सफर तय करते हैं.' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, भारत में पहले सनबीम, मैचलेस व बीएसए की मोटर साइकिलें चला करती थीं जो रईसों या पुलिस अधिकारियों के पास होती थीं. ईवी के इस युग में भी युवाओं की पसंद पेट्रोल वाली वजनदार बाइक है.' हमने कहा, यह पसंद अपनी-अपनी वाला मामला है. पावरफुल गाड़ी की आवाज से घबराकर लोग खुद ही रास्ता खाली कर देते हैं. आप ऐसी बाइक पर सवार होकर केरल से लद्दाख तक का सफर तय कर सकते हैं. अब संपन्न व शौकीन भारतवासी भी मेक इंडिया रिच अगेन की विचारधारा रखते हैं.

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12171 - डॉ. सागर खादीवाला

ऊपर से नीचे
1. रसोई घर (सं.) 2. शब्दालंकार का एक भेद 3. प्यारा या दुलारा लड़का 4. भय 5. प्रत्यक्ष, आमने-सामने (उर्दू) 7. डोली ढोने और पानी भरने का काम करने वाला 9. वस्त्र 12. गजल लिखने वाला 13. जहाज पर यात्रा करने वाला या जहाज से संबंध रखने वाला 14. रास्ता, पथ, मार्ग (उर्दू) 16. दुख, कष्ट, क्लेश (उर्दू) 17. अभियोगात्मक निंदा 18. प्रसिद्ध शिकारी एवं हिंसक पक्षी 20. धिक्कार, फटकार (उर्दू) 22.

बाएं से दाएं
1. पैर में पहनने का घुंघरुदार गहना, पाजेब 4. एक बाजा जिसके दोनों तरफ चमड़ा मढ़ा होता है तथा बीच का भाग पतला होता है 6. कमलों से भरा तालाब, कमलों का समूह (सं.) 8. बगुला 10. तरकारी, साग 11. बदसूरत 12. मेघध्वनि, ऊंची गंभीर आवाज 14. रहस्य, गुप्त बात, भेद (उर्दू) 15. स्थिति, दशा (उर्दू) 17. हंसी-मजाक, मसखरापन 19. हुनर, आर्ट 21. काम, कार्य 22. बड़ा गलीचा 23. उत्तोलक, यकृत (अं.) 24. भलमनसाहत (उर्दू)

Solution 12170

उ	मा	भा	र	ती		ब	ल
खा	ला		वा	त	प्र	को	प
ड़		म	दा	र		ट	क
ना	त	दा	र		ब	ना	ना
	जा	री		ना	द		
आ	य		स	ला	ह	का	र
र	त	ना	रा		वा	म	न
ता	न		ब	र	स	ना	

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में यात्रा होगी, पद एवं स्थान परिवर्तन के योग हैं, शारीरिक कष्ट का सामना करना पडेगा, भौतिक सुख प्राप्त होगा, उत्तरदायित्वों को सम्हालने की आवश्यकता है, वर्ष के मध्य में व्यापार के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी, यात्रा से कष्ट होगा, वर्ष के अन्त में विवाद एवं मतभेद हो सकते हैं, आय में सुधार होगा, भाईयों का सहयोग रहेगा.

मेष और वृश्चिक वृश्चिक राशि के व्यक्तियों के लिये रचनात्मक प्रयास सार्थक होंगे, भौतिक सुख साधनों में वृद्धि होगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को यात्रा का योग है, दाम्पत्य जीवन में कलह की स्थिति न आने दें, सिंह राशि के व्यक्तियों को कार्यो में वृद्धि होगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को दिनचर्या में व्यवधान आयेगा, स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को राजनीतिक गतिविधियों में वृद्धि होगी, पद एवं प्रभाव बना रहेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक मिलनसार, सहानुभूतिपूर्ण हृदय का होगा. इनकी शिक्षा उत्तम रहेगी. ईश्वर भक्त होगा. ये बातचीत में प्रवीण और व्यवहार कुशल तथा समझदार होते हैं. जन्म स्थान से दूर इनकी उन्नति होगी.

उदयकालीन ग्रह चाल

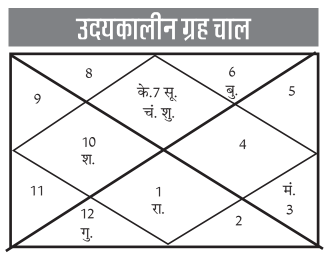

पंचांग

रा.मि. 25 संवत् 2082 फाल्गुन कृष्ण द्वादशी शनिवासरे दिन 3/11, पूर्वाषाढ़ नक्षत्रे शाम 5/45, सिद्धि योगे रात 3/6, तैतिल करणे सू.उ. 6/26, सू.अ. 5/34, चन्द्रचार धनु रात 12/11 से मकर, पर्व- शनि प्रदोष व्रत, शु.रा. 9,11, 12,3,5,7 अ.रा. 10,1,2,4,6,8 शुभांक- 2,4,8.

मेष- विलासिता के सामान पर खर्च करेंगे. आवेश में आने से बात बिगड़ सकती है. व्यवसायिक कार्यों में वृद्धि होगी. सामाजिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी. सम्मान मिलेगा.

वृषभ- बुजुर्गों के स्वास्थ्य का ध्यान रखें. कानूनी मामलों से दूर रहें. पठन पाठन में रूचि रहेगी. संबंधों का विकास होगा. संयम से काम करें. रचनात्मक कार्यों की प्राप्ति होगी.

मिथुन- दाम्पत्य सुख मिलेगा. निजी कार्यों को टालने से बात बिगड़ेगी. घर के किसी सदस्य की अस्वस्थ्यता से चिंता होगी. प्रयास में बाधा आने का योग है.

कर्क- रिश्तों में मधुरता बढ़ेगी. स्वास्थ्य पर ध्यान दें. परोपकारी कार्यों में यश मिलेगा. नौकरी में अधिनस्थों का उचित सहयोग प्राप्त होगा. श्रम अधिक रहेगा.

सिंह- कारोबार फायदे के लिये समझौता करना पड़ेगा. मित्रों कुटुम्बियों के सहयोग से पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति होगी. आर्थिक प्रयास सफल एवं सार्थक होगा. संयम रखें.

कन्या- विवादास्पद मामले सुलझने से राहत मिलेगी. प्रियजन से मुलाकात सुखद रहेगी. समय पर सोचे हुये कार्यों के बनने से हर्ष होगा. आर्थिक कष्ट दूर होगा.

तुला- मधुर व्यवहार से सबका दिल जीत लेंगे. मित्र मिलेगें. अनावश्यक कार्यों में धन खर्च होगा. परिश्रम की अधिकता रहेगी. साहस पराक्रम में वृद्धि होगी.

वृश्चिक- दिमाग की बजाय दिल से काम लें. आर्थिक समस्याओं का सरलता से समाधान होगा. प्रयत्न सार्थक होंगे. आय के एक से अधिक साधन प्राप्त होंगे.

धनु- विवादास्पद मामले बातचीत से सुलझा लेंगे. मेहमानों की आवाजाही से तय कार्यक्रम बदलना पड़ेगा. निजी पुरूषार्थ बनारहेगा. आरोग्य सुख उत्तम रहेगा.

मकर- वाकचातुर्य से बिगड़ी बात बना लेंगे. भाग्यवर्धक प्रयासों में सफलता मिलेगी. अधिक श्रम करना पड़ेगा. सामाजिक कार्यों की रूपरेखा पर विचार हो सकता है.

कुंभ- धार्मिक यात्रा हो सकती है. अटका धन मिलने की उम्मीद है. सोये हुये कार्यों में विलंब होगा. यश और मान-सम्मान की प्राप्ति होगी. निजी दायित्वों की पूर्ति का योग है.

मीन- कारोबारी यात्रा लाभदायी रहेगी. युवाओं को इच्छित नौकरी मिलेगी. मित्रता आपके लिये उपयोगी रहेगी. नवीन मित्रों का समागम होगा. यश प्राप्त होगा.

व्यापार भविष्य

फाल्गुन कृष्ण द्वादशी को पूर्वाषाढ़ नक्षत्र के प्रभाव से रूई, चांदी के भाव में तेजी होगी. गुड, खांड, लालमिर्च, सरसों के भाव में उछाल आयेगा. शेष वस्तुओं के भाव कल की चाल पर चलेंगे. बादाम, मीन, पिस्ता, छुहारा में मंदी की चाल चलेगी. भाग्यांक 2789 है.

SUDOKU 7303

3				8				9
		8	6		9	5		
6	5			4			7	1
	4						2	
1	2			6			9	8
		6	4		5	8		
9				1				7

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7302

2	3	8	5	1	9	6	4	7
9	6	4	7	3	8	2	5	1
5	1	7	4	6	2	8	3	9
3	2	5	1	9	7	4	6	8
1	8	9	6	4	3	7	2	5
4	7	6	2	8	5	1	9	3
6	4	3	8	5	1	9	7	2
8	9	2	3	7	4	5	1	6
7	5	1	9	2	6	3	8	4